॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — पद पाठः

तृतीयकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः

पवमानग्रहादीनां व्याख्यानं

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

यः। वै। पवमानानाम्। अन्वारोहानित्यनु—आरोहान्। विद्वान्। यजते। अन्विति। पवमानान्। एति। रोहति। न। पवमानेभ्यः। अवेति। छिद्यते। श्येनः। असि। गायत्रछन्दा इति गायत्र—छन्दाः। अन्विति। त्वा। एति। रभे। स्वस्ति। मा। समिति। पारय। सुपर्ण इति सु—पर्णः। असि। त्रिष्टुप्छन्दा इति त्रिष्टुप्—छन्दाः। अन्विति। त्वा। एति। रभे। स्वस्ति। मा। समिति। पारय। सघा। असि। जगतीछन्दा इति जगती—छन्दाः। अन्विति। त्वा। एति। रभे। स्वस्ति। मा। समिति। पारय। इति। आह। एते। १ (५०) ॥ [१] ॥ वै। पवमानानाम्। अन्वारोहा इत्यनु—आरोहाः। तान्। यः। एवम्। विद्वान्। यजते। अन्विति। पवमानान्। एति। रोहति। न। पवमानेभ्यः। अवेति। छिद्यते। यः। वै। पवमानस्य। सन्ततिमिति सं—ततिम्। वेद। सर्वम्। आयुः। एति। न। पुरा। आयुषः। प्रेति। मीयते। पशुमानिति पशु—मान्। भवति। विन्दते। प्रजामिति प्र—जाम्। पवमानस्य। ग्रहाः। गृह्यन्ते। अथ। वै। अस्य। एते। अगृहीताः। द्रोणकलश इति द्रोण—कलशः। आधवनीय इत्या—धवनीयः। पूतभृदिति पूत—भृत्। तान्। यत्। अगृहीत्वा। उपाकुर्यादित्युप—आकुर्यात्। पवमानम्। वीति। २ (५०) ॥ [२] ॥ छिन्द्यात्। तम्। विच्छिद्यमानमिति वि—छिद्यमानम्। अद्ध्वर्योः। प्राण इति प्र—अनः। अनु। वीति। छिद्येत। उपयामगृहीत इत्युपयाम—गृहीतः। असि। प्रजापतय इति प्रजा—पतये। त्वा। इति। द्रोणकलशमिति द्रोण—कलशम्। अभीति। मृशेत्। इन्द्राय। त्वा।

इति। आधवनीयमित्या—धवनीयम्। विश्वेभ्यः। त्वा। देवेभ्यः। इति। पूतभृतमिति पूत—भृतम्। पवमानम्। एव। तत्। समिति। तनोति। सर्वम्। आयुः। एति। न। पुरा। आयुषः। प्रेति। मीयते। पशुमानिति पशु—मान्। भवति। विन्दते। प्रजामिति प्र—जाम् ॥ [३] ॥

(एते वि द्विचत्वारिꣳशच्च) ॥ १ ॥

त्रीणि। वाव। सवनानि। अथ। तृतीयम्। सवनम्। अवेति। लुंपन्ति। अनꣳशु। कुर्वन्तः। उपाꣳशुमित्युप—अꣳशुम्। हुत्वा। उपाꣳशुपात्र इत्युपाꣳशु—पात्रे। अꣳशुम्। अवास्येत्यव—अस्य। तम्। तृतीयसवन इति तृतीय—सवने। अपिसृज्येत्यपि—सृज्य। अभीति। सनुयात्। यत्। आप्याययतीत्या—प्याययति। तेन। अꣳशुमदित्यꣳशु—मत्। यत्। अभिषुणोतीत्यभि—सुनोति। तेन। ऋजीषि। सर्वाणि। एव। तत्। सवनानि। अꣳशुमन्तीत्यꣳशु—मन्ति। शुक्रवन्तीति शुक्र—वन्ति। समावद् वीर्याणीति समावत्—वीर्याणि। करोति। द्वौ। समुद्रौ। वितताविति वि—ततौ। अजूर्यौ। पर्यावर्तेते इति परि—आवर्तेते। जठरा। इव। पादाः॥ तयोः। पश्यन्तः। अतीति। यन्ति। अन्यम्। अपश्यन्तः। ४ (५०) ॥ [४] ॥ सेतुना। अतीति। यन्ति। अन्यम्॥ द्वे इति। द्रधसी इति। सतती इति स—तती। वस्ते। एकः। केशी। विश्वा। भुवनानि। विद्वान्॥ तिरोधायेति तिरः—धाय। एति। असितम्। वसानः। शुक्रम्। एति। दत्ते। अनुहायेत्यनु—हाय। जायै॥ देवाः। वै। यत्। यज्ञे। अकुर्वत। तत्। असुराः। अकुर्वत। ते। देवाः। एतम्। महायज्ञमिति महा—यज्ञम्। अपश्यन्न्। तम्। अतन्वत। अग्निहोत्रमित्यग्नि—होत्रम्। व्रतम्। अकुर्वत। तस्मात्। द्विव्रत इति द्वि—व्रतः। स्यात्। द्विः। हि। अग्निहोत्रमित्यग्नि—होत्रम्। जुह्वति। पौर्णमासमिति पौर्ण—मासम्। यज्ञम्। अग्नीषोमीयमित्यग्नी—सोमीयम्। ५ (५०) ॥ [५] ॥ पशुम्। अकुर्वत। दार्श्यम्। यज्ञम्। आग्नेयम्। पशुम्। अकुर्वत। वैश्वदेवमिति वैश्व—देवम्। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। अकुर्वत। वरुणप्रघासानिति वरुण—प्रघासान्। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। साकमेधानिति साक—मेधान्। पितृयज्ञमिति पितृ—यज्ञं। त्र्यंबकानिति त्रि—अंबकान्। तृतीयसवनमिति तृतीय—सवनम्। अकुर्वत। तम्। एषाम्। असुराः। यज्ञम्। अन्ववाजिगाꣳसन्नित्यनु—अवाजिगाꣳसन्न्। तम्। न।

अन्ववायन्नित्यनु—अवायन्न्। ते। अब्रुवन्न्। अद्ध्वर्तव्याः। वै। इमे। देवाः। अभूवन्न्। इति। तत्। अद्ध्वरस्य। अद्ध्वरत्वमित्यद्ध्वर—त्वम्। ततः। देवाः। अभवन्न्। परेति। असुराः। यः। एवम्। विद्वान्। सोमेन। यजते। भवति। आत्मना। परेति। अस्य। भ्रातृव्यः। भवति ॥ [६] ॥

(अपश्यन्तोऽ ग्नीषोमीय मात्मना परा त्रीणि च) ॥ २ ॥

परिभूरिति परि—भूः। अग्निम्। परिभूरिति परि—भूः। इन्द्रम्। परिभूरिति परि—भूः। विश्वान्। देवान्। परिभूरिति परि—भूः। माम्। सह। ब्रह्मवर्चसेनेति ब्रह्म—वर्चसेन। सः। नः। पवस्व। शम्। गवे। शम्। जनाय। शम्। अर्वते। शम्। राजन्न्। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। अच्छिन्नस्य। ते। रयिपत इति रयि—पते। सुवीर्यस्येति सु—वीर्यस्य। रायः। पोषस्य। ददितारः। स्याम॥ तस्य। मे। रास्व। तस्य। ते। भक्षीय। तस्य। ते। इदम्। उदिति। मृजे॥ प्राणायेति प्र—अनाय। मे। वर्चोदा इति वर्चः—दाः। वर्चसे। पवस्व। अपानायेत्यप—अनाय। व्यानायेति वि—अनाय। वाचे। ७ (५०) ॥ [७] ॥ दक्षक्रतुभ्यामिति दक्षक्रतु—भ्याम्। चक्षुर्भ्यामिति चक्षुः—भ्याम्। मे। वर्चोदाविति वर्चः—दौ। वर्चसे। पवेथाम्। श्रोत्राय। आत्मने। अङ्गेभ्यः। आयुषे। वीर्याय। विष्णोः। इन्द्रस्य। विश्वेषाम्। देवानाम्। जठरम्। असि। वर्चोदा इति वर्चः—दाः। मे। वर्चसे। पवस्व। कः। असि। कः। नाम। कस्मै। त्वा। काय। त्वा। यम्। त्वा। सोमेन। अतीतृपम्। यम्। त्वा। सोमेन। अमीमदम्। सुप्रजा इति सु—प्रजाः। प्रजयेति प्र—जया। भूयासम्। सुवीर इति सु—वीरः। वीरैः। सुवर्चा इति सु—वर्चाः। वर्चसा। सुपोष इति सु—पोषः। पोषैः। विश्वेभ्यः। मे। रूपेभ्यः। वर्चोदा इति वर्चः—दाः। ८ (५०) ॥ [८] ॥ वर्चसे। पवस्व। तस्य। मे। रास्व। तस्य। ते। भक्षीय। तस्य। ते। इदम्। उदिति। मृजे॥ बुभूषन्न्। अवेति। ईक्षेत। एषः। वै। पात्रियः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। यज्ञः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। तम्। एव। तर्पयति। सः। एनम्। तृप्तः। भूत्या। अभीति। पवते। ब्रह्मवर्चसकाम इति ब्रह्मवर्चस—कामः। अवेति। ईक्षेत। एषः। वै। पात्रियः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। यज्ञः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। तम्। एव।

तर्पयति। सः। एनम्। तृप्तः। ब्रह्मवर्चसेनेति ब्रह्म—वर्चसेन। अभीति। पवते। आमयावी। ९ (५०) ॥ [९] ॥ अवेति। ईख्षेत। एषः। वै। पात्रियः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। यज्ञः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। तम्। एव। तर्पयति। सः। एनम्। तृप्तः। आयुषा। अभीति। पवते। अभिचरन्नित्यभि—चरन्न्। अवेति। ईख्षेत। एषः। वै। पात्रियः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। यज्ञः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। तम्। एव। तर्पयति। सः। एनम्। तृप्तः। प्राणापानाभ्यामिति प्राण—अपानाभ्याम्। वाचः। दख्षक्रतुभ्यामिति दख्षक्रतु—भ्याम्। चख्षुर्भ्यामिति चख्षुः—भ्याम्। श्रोत्राभ्याम्। आत्मनः। अङ्गेभ्यः। आयुषः। अन्तः। एति। ताजक्। प्रेति। धन्वति ॥ [१०] ॥

(वाचेरूपेभ्यों वर्चोदा आमयावी पञ्चचत्वारिंशच्च) ॥ ३ ॥

स्फ्यः। स्वस्तिः। विघन इति वि—घनः। स्वस्तिः। परशुः। वेदिः। परशुः। नः। स्वस्तिः॥ यज्ञियाः। यज्ञकृत इति यज्ञ—कृतः। स्थ। ते। मा। अस्मिन्न्। यज्ञे। उपेति। ह्वयद्ध्वम्। उपेति। मा। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। ह्वयेताम्। उपेति। आस्ताव इत्या—स्तावः। कलशः। सोमः। अग्निः। उपेति। देवाः। उपेति। यज्ञः। उपेति। मा। होत्राः। उपहव इत्युप—हवे। ह्वयन्ताम्। नमः। अग्नये। मखघ्न इति मख—घ्ने। मखस्य। मा। यशः। अर्यात्। इति। आहवनीयमित्या—हवनीयम्। उपेति। तिष्ठते। यज्ञः। वै। मखः। ११ (५०) ॥ [११] ॥ यज्ञम्। वाव। सः। तत्। अहन्न्। तस्मै। एव। नमस्कृत्येति नमः—कृत्य। सदः। प्रेति। सर्पति। आत्मनः। अनार्त्यै। नमः। रुद्राय। मखघ्न इति मख—घ्ने। नमस्कृत्येति नमः—कृत्या। मा। पाहि। इति। आग्नीद्ध्रमित्याग्नि—इद्ध्रम्। तस्मै। एव। नमस्कृत्येति नमः—कृत्य। सदः। प्रेति। सर्पति। आत्मनः। अनार्त्यै। नमः। इन्द्राय। मखघ्न इति मख—घ्ने। इन्द्रियम्। मे। वीर्यम्। मा। निरिति। वधीः। इति। होत्रीयम्। आशिषमित्या—शिषम्। एव। एताम्। एति। शास्ते। इन्द्रियस्य। वीर्यस्य। अनिर्घातायेत्यनिः—घाताय। याः। वै। १२ (५०) ॥ [१२] ॥ देवताः। सदसि। आर्तिम्। आर्पयन्तीत्या—अर्पयन्ति। यः। ताः। विद्वान्। प्रसर्पतीति प्र—सर्पति। न। सदसि। आर्तिम्। एति। ऋच्छति। नमः। अग्नये। मखघ्न इति मख—घ्ने। इति।

आह। एताः। वै। देवताः। सदसि। आर्तिम्। एति। अर्पयन्ति। ताः। यः। एवम्। विद्वान्। प्रसर्पतीति प्र—सर्पति। न। सदसि। आर्तिम्। एति। ऋच्छति। दृढे इति। स्थः। शिथिरे इति। समीची इति। मा। अꣳहसः। पातम्। सूर्यः। मा। देवः। दिव्यात्। अꣳहसः। पातु। वायुः। अन्तरिक्षात्। १३ (५०) ॥ [१३] ॥ अग्निः। पृथिव्याः। यमः। पितृभ्य इति पितृ—भ्यः। सरस्वती। मनुष्येभ्यः। देवी इति। द्वारौ। मा। मा। सम्। तापतम्। नमः। सदसे। नमः। सदसः। पतये। नमः। सखीनाम्। पुरोगाणामिति पुरः—गानाम्। चक्षुषे। नमः। दिवे। नमः। पृथिव्यै। अहे। दैधिषव्य। उदिति। अतः। तिष्ठ। अन्यस्य। सदने। सीद। यः। अस्मत्। पाकतर इति पाक—तरः। उदिति। निवत इति नि—वतः। उदिति। उद्वत इत्युत्—वतः। च। गेषम्। पातम्। मा। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। अद्य। अह्नः। सदः। वै। प्रसर्पन्तमिति प्र—सर्पन्तम्। १४ (५०) ॥ [१४] ॥ पितरः। अनु। प्रेति। सर्पन्ति। ते। एनम्। ईश्वराः। हिꣳसितोः। सदः। प्रसृप्येति प्र—सृप्य। दक्षिणार्द्धमिति दक्षिण—अर्द्धम्। परेति। ईक्षेत। एति। अगन्त। पितरः। पितृमानिति पितृ—मान्। अहम्। युष्माभिः। भूयासम्। सुप्रजस इति सु—प्रजसः। मया। यूयम्। भूयास्त। इति। तेभ्यः। एव। नमस्कृत्येति नमः—कृत्य। सदः। प्रेति। सर्पति। आत्मनः। अनार्त्यै ॥ [१५] ॥

(मखो वा अन्तरिक्षात् प्रसर्पन्तं त्रयस्त्रिꣳशच्च) ॥ ४ ॥

भक्ष। एति। इहि। मा। एति। विश। दीर्घायुत्वायेति दीर्घायु—त्वाय। शन्तनुत्वायेति शन्तनु—त्वाय। रायः। पोषाय। वर्चसे। सुप्रजास्त्वायेति सुप्रजाः—त्वाय। एति। इहि। वसो इति। पुरोवसो इति पुरः—वसो। प्रियः। मे। हृदः। असि। अश्विनोः। त्वा। बाहुभ्यामिति बाहु—भ्याम्। सघ्यासम्। नृचक्षसमिति नृ—चक्षसम्। त्वा। देव। सोम। सुचक्षा इति सु—चक्षाः। अवेति। ख्येषम्। मन्द्रा। अभिभूतिरित्यभि—भूतिः। केतुः। यज्ञानाम्। वाक्। जुषाणा। सोमस्य। तृप्यतु। मन्द्रा। स्वर्वाचीति सु—अर्वाची। अदितिः। अनाहतशीर्ष्णीत्य-नाहत—शीर्ष्णी। वाक्। जुषाणा। सोमस्य। तृप्यतु। एति। इहि। विश्वचर्षण इति विश्व—चर्षणे। १६ (५०) ॥ [१६] ॥ शंभूरिति शं—भूः। मयोभूरिति मयः—भूः। स्वस्ति। मा।

ह॒रि॒व॒र्णेति॑ हरि—व॒र्ण॒। प्रेति॑। च॒र॒। क्रत्वे᳚। द॒क्षाय॑। रा॒यः। पोषा॑य। सु॒वी॒रता॑या॒ इति॑ सु—वी॒रता॑यै। मा। मा॒। रा॒ज॒न्न्। वीति॑। बी॒भि॒षः॒। मा। मे॒। हार्दि॑। त्वि॒षा। व॒धीः॒॥ वृष॑णे। शुष्मा॑य। आयु॑षे। वर्च॑से॥ वसु॑मद् ग॒णस्येति॒ वसु॑मत्—ग॒ण॒स्य॒। सो॒म॒। दे॒व॒। ते॒। म॒ति॒वि॒द॒ इति॑ मति—विदः॑। प्रा॒त॒स्स॒व॒नस्येति॑ प्रातः—स॒व॒नस्य॑। गा॒य॒त्रछ॑न्दस॒ इति॑ गाय॒त्र—छ॒न्द॒सः॒। इन्द्र॑पीत॒स्येतीन्द्र॑—पी॒त॒स्य॒। न॒रा॒शꣳस॑पीत॒स्येति॒ न॒रा॒शꣳस॑—पी॒त॒स्य॒। पि॒तृपी॑त॒स्येति॑ पि॒तृ—पी॒त॒स्य॒। मधु॑मत॒ इति॒ मधु॑—म॒तः॒। उप॑हूत॒स्येत्युप॑—हू॒त॒स्य॒। उप॑हूत॒ इत्युप॑—हू॒तः॒। भ॒क्ष॒या॒मि॒। रु॒द्रव॑द्ग॒णस्येति॑ रु॒द्रव॑त्—ग॒ण॒स्य॒। सो॒म॒। दे॒व॒। ते॒। म॒ति॒वि॒द॒ इति॑ मति—विदः॑। माद्ध्य॑न्दिनस्य। सव॑नस्य। त्रि॒ष्टुप्छ॑न्दस॒ इति॑ त्रि॒ष्टुप्—छ॒न्द॒सः॒। इन्द्र॑पीत॒स्येतीन्द्र॑—पी॒त॒स्य॒। न॒रा॒शꣳस॑पीत॒स्येति॒ न॒रा॒शꣳस॑—पी॒त॒स्य॒। १७ (५०) ॥ [१७] ॥ पि॒तृपी॑त॒स्येति॑ पि॒तृ—पी॒त॒स्य॒। मधु॑मत॒ इति॒ मधु॑—म॒तः॒। उप॑हूत॒स्येत्युप॑—हू॒त॒स्य॒। उप॑हूत॒ इत्युप॑—हू॒तः॒। भ॒क्ष॒या॒मि॒। आ॒दि॒त्यव॑द्ग॒णस्येत्या॑दि॒त्यव॑त्—ग॒ण॒स्य॒। सो॒म॒। दे॒व॒। ते॒। म॒ति॒वि॒द॒ इति॑ मति—विदः॑। तृ॒तीय॑स्य। सव॑नस्य। जग॑तीछन्दस॒ इति॒ जग॑ती—छ॒न्द॒सः॒। इन्द्र॑पीत॒स्येतीन्द्र॑—पी॒त॒स्य॒। न॒रा॒शꣳस॑पीत॒स्येति॒ न॒रा॒शꣳस॑—पी॒त॒स्य॒। पि॒तृपी॑त॒स्येति॑ पि॒तृ—पी॒त॒स्य॒। मधु॑मत॒ इति॒ मधु॑—म॒तः॒। उप॑हूत॒स्येत्युप॑—हू॒त॒स्य॒। उप॑हूत॒ इत्युप॑—हू॒तः॒। भ॒क्ष॒या॒मि॒॥ एति॑। प्या॒य॒स्व॒। समिति॑। ए॒तु॒। ते॒। वि॒श्वतः॑। सो॒म॒। वृष्णि॑यम्॥ भव॑। वाज॑स्य। स॒ङ्ग॒थ इति॑ सं—ग॒थे॥ हिन्व॑। मे॒। गात्रा᳚। ह॒रि॒व॒ इति॑ हरि—व॒ः। ग॒णान्। मे॒। मा। वीति॑। ती॒तृ॒षः॥ शि॒वः। म॒। स॒प्त॒र्षीनिति॑ सप्त—ऋ॒षीन्। उपेति॑। ति॒ष्ठ॒स्व॒। मा। मे॒। अवा॑ङ्। नाभि᳚म्। अतीति॑। १८ (५०) ॥ [१८] ॥ गाः॒॥ अपा॑म। सोम᳚म्। अ॒मृता᳚ः। अ॒भू॒म॒। अद॑र्श्म। ज्योति॑ः। अवि॑दाम। दे॒वान्॥ किम्। अ॒स्मान्। कृ॒ण॒व॒त्। अरा॑तिः। किम्। उ॒। धूर्तिः॑। अ॒मृ॒त॒। मर्त्य॑स्य॥ यत्। मे॒। आ॒त्मन॑ः। मि॒न्दा। अभू᳚त्। अ॒ग्निः। तत्। पुन॑ः। एति॑। अ॒हा॒ः। जा॒तवे॑दा॒ इति॑ जा॒त—वे॒दा॒ः। विच॑र्षणि॒रिति॒ वि—च॒र्ष॒णि॒ः॥ पुन॑ः। अ॒ग्निः। चक्षु॑ः। अ॒दा॒त्। पुन॑ः। इन्द्र॑ः। बृ॒ह॒स्पति॑ः॥ पुन॑ः। मे॒। अ॒श्वि॒ना॒। यु॒वम्। चक्षु॑ः। एति॑। ध॒त्त॒म्। अ॒क्ष्योः॥ इ॒ष्टय॑जुष॒ इती॒ष्ट—य॒जु॒षः। ते॒। दे॒व॒। सो॒म॒। स्तु॒तस्तो॑म॒स्येति॑ स्तु॒त—स्तो॒म॒स्य॒। १९ (५०) ॥ [१९] ॥ श॒स्तोक्थ॒स्येति॑ श॒स्त—उ॒क्थ॒स्य॒। हरि॑वत॒ इति॒ हरि॑—व॒तः॒। इन्द्र॑पीत॒स्येतीन्द्र॑—पी॒त॒स्य॒। मधु॑मत॒ इति॒ मधु॑—म॒तः॒। उप॑हूत॒स्येत्युप॑—

हू॒तस्य॑। उप॑हू॒त॒ इत्युप॑—हू॒तः॒। भ॒क्ष॒या॒मि॒॥ आ॒पूर्या॒ इत्या᳚—पूर्याः᳚। स्थ॒। ए॒ति॒। मा॒। पू॒र॒य॒त॒। प्र॒जयेति॑ प्र—जया᳚। च॒। धने॑न। च॒॥ ए॒तत्। ते॒। त॒त॒। ये। च॒। त्वाम्। अन्विति॑। ए॒तत्। ते॒। पि॒ता॒म॒ह॒। प्र॒पि॒ता॒म॒हेति॑ प्र—पि॒ता॒म॒ह॒। ये। च॒। त्वाम्। अन्विति॑। अत्र॑। पि॒त॒रः॒। य॒था॒भा॒ग-मिति॑ यथा—भा॒गम्। म॒न्द॒द्ध्व॒म्। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। रसा॑य। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। शुष्मा॑य। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। जी॒वाय॑। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। २० (५०) ॥ [२०] ॥ स्व॒धाया॒ इति॑ स्व—धायै᳚। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। म॒न्यवे᳚। नमः॑। व॒ः। पि॒त॒रः॒। घो॒राय॑। पित॑रः। नमः॑। व॒ः। ये। ए॒तस्मि॑न्न्। लो॒के। स्थ। यु॒ष्मान्। ते। अन्विति॑। ये। अ॒स्मिन्न्। लो॒के। माम्। ते। अन्विति॑। ये। ए॒तस्मि॑न्न्। लो॒के। स्थ। यू॒यम्। तेषा᳚म्। वसि॑ष्ठाः। भू॒या॒स्त॒। ये। अ॒स्मिन्न्। लो॒के। अ॒हम्। तेषा᳚म्। वसि॑ष्ठः। भू॒या॒स॒म्। प्रजा॑पत॒ इति॑ प्रजा᳚—प॒ते॒। न। त्वत्। ए॒तानि॑। अ॒न्यः। विश्वा᳚। जा॒तानि॑। परीति॑। ता। ब॒भू॒व॒ ॥ [२१] ॥ यत्का॑मा॒ इति॑ यत्—का॒मा॒ः। ते॒। जु॒हु॒मः। तत्। नः॒। अ॒स्तु॒। व॒यम्। स्या॒म॒। पत॑यः। र॒यी॒णाम्॥ दे॒वकृ॑त॒स्येति॑ दे॒व—कृ॒त॒स्य॒। एन॑सः। अ॒व॒य-जन॒मित्य॑व—यज॑नम्। अ॒सि॒। म॒नु॒ष्य॑कृत॒स्येति॑ मनु॒ष्य॑—कृ॒त॒स्य॒। एन॑सः। अ॒व॒यज॑न॒मित्य॑व—यज॑नम्। अ॒सि॒। पि॒तृकृ॑त॒स्येति॑ पि॒तृ—कृ॒त॒स्य॒। एन॑सः। अ॒व॒यज॑न॒मित्य॑व—यज॑नम्। अ॒सि॒। अ॒प्स्वित्य॑प्—सु। धौ॒तस्य॑। सो॒म॒। दे॒व॒। ते॒। नृ॒भि॒रिति॒ नृ—भिः॒। सु॒तस्य॑। इ॒ष्टय॑जु॒ष इती॒ष्ट—य॒जु॒षः॒। स्तु॒तस्तो॑म॒स्येति॑ स्तु॒त—स्तो॒म॒स्य॒। श॒स्तोक्थ॒स्येति॑ श॒स्त—उ॒क्थ॒स्य॒। यः। भ॒क्षः। अ॒श्व॒सनि॒रित्य॑श्व—सनिः॑। यः। गो॒सनि॒रिति॑ गो—सनिः॑। तस्य॑। ते॒। पि॒तृभि॒रिति॑ पि॒तृ—भिः॑। भ॒क्षं कृ॒त॒स्येति॑ भ॒क्षं—कृ॒त॒स्य॒। उप॑हूत॒स्येत्युप॑—हू॒त॒स्य॒। उप॑हूत॒ इत्युप॑—हू॒तः॒। भ॒क्ष॒-या॒मि॒ ॥ [२२] ॥

(वि॒श्व॒च॒र्॒ष॒णे॒ त्रि॒ष्टुप्छ॑न्दस॒ इन्द्र॑पीतस्य॒ न॒रा॒श॒ꣳस॑पीतस्या॒ ऽति॑ स्तु॒तस्तो॑मस्य जी॒वाय॒ नमो॑ वः॒ पित॑रो ब॒भूव॒ चतु॑श्चत्वारिꣳशच्च) ॥ ५ ॥

म॒ही॒नाम्। पयः॑। अ॒सि॒। विश्वे॑षाम्। दे॒वाना᳚म्। त॒नूः। ऋ॒द्ध्यास॑म्। अ॒द्य। पृष॑तीनाम्। ग्रह᳚म्। पृष॑तीनाम्। ग्रहः॑। अ॒सि॒। विष्णोः᳚। हृद॑यम्। अ॒सि॒। एक॑म्। इ॒ष॒। विष्णुः॑। त्वा॒। अनु॑। वीति॑। च॒क्र॒मे॒। भू॒तिः। द॒द्ध्रा॒। घृ॒तेन॑। व॒र्द्ध॒ता॒म्। तस्य॑। मा॒। इ॒ष्टस्य॑। वी॒तस्य॑। द्रवि॑णम्।

एति। गम्यात्। ज्योतिः। असि। वैश्वानरम्। पृश्निये। दुग्धम्। यावती इति। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। महित्वेति महि—त्वा। यावत्। च। सप्त। सिन्धवः। वितस्थुरिति वि—तस्थुः॥ तावन्तम्। इन्द्र। ते। २३ (५०) ॥ [२३] ॥ ग्रहम्। सह। ऊर्जा। गृह्णामि। अस्तृतम्॥ यत्। कृष्णशकुन इति कृष्ण—शकुनः। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। अवमृशेदित्यव—मृशेत्। शूद्राः। अस्य। प्रमायुका इति प्र—मायुकाः। स्युः। यत्। श्वा। अवमृशेदित्यव—मृशेत्। चतुष्पाद इति चतुः—पादः। अस्य। पशवः। प्रमायुका इति प्र—मायुकाः। स्युः। यत्। स्कन्देत्। यजमानः। प्रमायुक इति प्र—मायुकः। स्यात्। पशवः। वै। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। पशवः। वै। एतस्य। स्कन्दन्ति। यस्य। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। स्कन्दति। यत्। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। पुनः। गृह्णाति। पशून्। एव। अस्मै। पुनः। गृह्णाति। प्राण इति प्र—अनः। वै। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। प्राण इति प्र—अनः। वै ॥ [२४] ॥ एतस्य। स्कन्दति। यस्य। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। स्कन्दति। यत्। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। पुनः। गृह्णाति। प्राणमिति प्र—अनम्। एव। अस्मै। पुनः। गृह्णाति। हिरण्यम्। अवधायेत्यव—धाय। गृह्णाति। अमृतम्। वै। हिरण्यम्। प्राण इति प्र—अनः। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। अमृतम्। एव। अस्य। प्राण इति प्र—अने। दधाति। शतमानमिति शत—मानम्। भवति। शतायुरिति शत—आयुः। पुरुषः। शतेन्द्रिय इति शत—इन्द्रियः। आयुषि। एव। इन्द्रिये। प्रतीति। तिष्ठति। अश्वम्। अवेति। घ्रापयति। प्राजापत्य इति प्राजा—पत्यः। वै। अश्वः। प्राजापत्य इति प्राजा—पत्यः। प्राण इति प्र—अनः। स्वात्। एव। अस्मै। योनेः। प्राणमिति प्र—अनम्। निरिति। मिमीते। वीति। वै। एतस्य। यज्ञः। छिद्यते। यस्य। पृषदाज्यमिति पृषत्—आज्यम्। स्कन्दति। वैष्णव्या। ऋचा। पुनः। गृह्णाति। यज्ञः। वै। विष्णुः। यज्ञेन। एव। यज्ञम्। समिति। तनोति ॥ [२५] ॥

(ते पृषदाज्यं प्राणो वै योनेः प्राणं द्वाविꣳशतिश्च) ॥ ६ ॥

देव। सवितः। एतत्। ते। प्रेति। आह। तत्। प्रेति। च। सुव। प्रेति। च। यज। बृहस्पतिः। ब्रह्मा। आयुष्मत्याः। ऋचः। मा। गात। तनूपादिति तनू—पात्। साम्नः। सत्याः।

वः। आशिष इत्या—शिषः। सन्तु। सत्याः। आकूतय इत्या—कूतयः। ऋतम्। च। सत्यम्। च। वदत। स्तुत। देवस्य। सवितुः। प्रसव इति प्र—सवे। स्तुतस्य। स्तुतम्। असि। ऊर्जम्। मह्यम्। स्तुतम्। दुहाम्। एति। मा। स्तुतस्य। स्तुतम्। गम्यात्। शस्त्रस्य। शस्त्रम्। २६ (५०) ॥ [२६] ॥ असि। ऊर्जम्। मह्यम्। शस्त्रम्। दुहाम्। एति। मा। शस्त्रस्य। शस्त्रम्। गम्यात्। इन्द्रियावन्त इतीन्द्रिय—वन्तः। वनामहे। धुक्षीमहि। प्रजामिति प्र—जाम्। इषम्॥ सा। मे। सत्या। आशीरित्या—शीः। देवेषु। भूयात्। ब्रह्मवर्चसमिति ब्रह्म—वर्चसम्। मा। एति। गम्यात्॥ यज्ञः। बभूव। सः। एति। बभूव। सः। प्रेति। जज्ञे। सः। वावृधे॥ सः। देवानाम्। अधिपतिरित्यधि—पतिः। बभूव। सः। अस्मान्। अधिपतीनित्यधि—पतीन्। करोतु। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥ यज्ञः। वा। वै। २७ (५०) ॥ [२७] ॥ यज्ञपतिमिति यज्ञ—पतिम्। दुहे। यज्ञपतिरिति यज्ञ—पतिः। वा। यज्ञम्। दुहे। सः। यः। स्तुतशस्त्रयोरिति स्तुत—शस्त्रयोः। दोहम्। अविद्वान्। यजते। तम्। यज्ञः। दुहे। सः। इष्ट्वा। पापीयान्। भवति। यः। एनयोः। दोहम्। विद्वान्। यजते। सः। यज्ञम्। दुहे। सः। इष्ट्वा। वसीयान्। भवति। स्तुतस्य। स्तुतम्। असि। ऊर्जम्। मह्यम्। स्तुतम्। दुहाम्। एति। मा। स्तुतस्य। स्तुतम्। गम्यात्। शस्त्रस्य। शस्त्रम्। असि। ऊर्जम्। मह्यम्। शस्त्रम्। दुहाम्। एति। मा। शस्त्रस्य। शस्त्रम्। गम्यात्। इति। आह। एषः। वै। स्तुतशस्त्रयोरिति स्तुत—शस्त्रयोः। दोहः। तम्। यः। एवम्। विद्वान्। यजते। दुहे। एव। यज्ञम्। इष्ट्वा। वसीयान्। भवति ॥ [२८] ॥

(शस्त्रं वै शस्त्रन्दुहां द्वाविꣳशतिश्च) ॥ ७ ॥

श्येनाय। पत्वने। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। विष्टंभायेति वि—स्तंभाय। धर्मणे। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। परिधय इति परि—धये। जनप्रथनायेति जन—प्रथनाय। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। ऊर्जे। होत्राणाम्। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। पयसे। होत्राणाम्। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। प्रजा-पतय इति प्रजा—पतये। मनवे। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः।

ऋतम्। ऋतपा इत्यृत—पाः। सुवर्वाडिति सुवः—वाट्। स्वाहा। वट्। स्वयमभिगूर्तायेति स्वयं—अभिगूर्ताय। नमः। तृंपन्ताम्। होत्राः। मधोः। घृतस्य। यज्ञपतिमिति यज्ञ—पतिम्। ऋषयः। एनसा। २९ (५०) ॥ [२९] ॥ आहुः॥ प्रजा इति प्र—जाः। निर्भक्ता इति निः—भक्ताः। अनुतप्यमाना इत्यनु—तप्यमानाः। मधव्यौ। स्तोकौ। अपेति। तौ। रराध॥ समिति। नः। ताभ्याम्। सृजतु। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। घोराः। ऋषयः। नमः। अस्तु। एभ्यः॥ चक्षुषः। एषाम्। मनसः। च। सन्धाविति सं—धौ। बृहस्पतये। महि। सत्। द्युमदिति द्यु—मत्। नमः॥ नमः। विश्वकर्मण इति विश्व—कर्मणे। सः। उ। पातु। अस्मान्। अनन्यान्। सोमपानिति सोम—पान्। मन्यमानः॥ प्राणस्येति प्र—अनस्य। विद्वान्। समर इति सं—अरे। न। धीरः। एनः। चकृवान्। महि। बद्धः। एषाम्॥ तम्। विश्वकर्मन्निति विश्व—कर्मन्न्। ३० (५०) ॥ [३०] ॥ प्रेति। मुञ्च। स्वस्तये। ये। भक्षयन्तः। न। वसूनि। आनृहुः॥ यान्। अग्नयः। अन्वतप्यन्तेत्यनु—अतप्यन्त। धिष्णियाः। इयम्। तेषाम्। अवया। दुरिष्ट्या इति दुः—इष्ट्यै। स्विष्टिमिति सु—इष्टिम्। नः। ताम्। कृणोतु। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा॥ नमः। पितृभ्य इति पितृ—भ्यः। अभीति। ये। नः। अख्यन्न्। यज्ञकृत इति यज्ञ—कृतः। यज्ञकामा इति यज्ञ—कामाः। सुदेवा इति सु—देवाः। अकामाः। वः। दक्षिणाम्। न। नीनिम। मा। नः। तस्मात्। एनसः। पापयिष्ट॥ यावन्तः। वै। सदस्याः। ते। सर्वे। दक्षिण्याः। तेभ्यः। यः। दक्षिणाम्। न। ३१ (५०) ॥ [३१] ॥ नयेत्। एति। एभ्यः। वृश्च्येत। यत्। वैश्वकर्मणा-नीति वैश्व—कर्मणानि। जुहोति। सदस्यान्। एव। तत्। प्रीणाति। अस्मे इति। देवासः। वपुषे। चिकित्सत। यम्। आशिरा। दंपती इति। वामम्। अश्नुतः॥ पुमान्। पुत्रः। जायते। विन्दते। वसु। अथ। विश्वे। अरपाः। एधते। गृहः॥ आशीर्दायेत्याशीः—दाया। दंपती इति। वामम्। अश्नुताम्। अरिष्टः। रायः। सचताम्। समोकसेति सं—ओकसा॥ यः। एति। असिंचत्। सन्दु-ग्धमिति सं—दुग्धम्। कुंभ्या। सह। इष्टेन। यामन्न्। अमतिम्। जहातु। सः॥ सर्पिर्ग्रीवीति सर्पिः—ग्रीवी। ३२ (५०) ॥ [३२] ॥ पीवरी। अस्य। जाया। पीवानः। पुत्राः। अकृशासः। अस्य॥ सहजानिरिति सह—जानिः। यः। सुमखस्यमान इति सु—मखस्यमानः। इन्द्राय। आशिरम्। सह। कुंभ्या। अदात्॥ आशीरित्या—शीः। मे। ऊर्जम्। उत। सुप्रजास्त्वमिति

सुप्रजाः—त्वम्। इषम्। दधातु। द्रविणम्। सवर्चसमिति स—वर्चसम्॥ सञ्जयन्निति सं—जयन्न्। क्षेत्राणि। सहसा। अहम्। इन्द्र। कृण्वानः। अन्यान्। अधरान्। सपत्नान्॥ भूतम्। असि। भूते। मा। धाः। मुखम्। असि। मुखम्। भूयासम्। द्यावापृथिवीभ्यामिति द्यावा—पृथिवीभ्याम्। त्वा। परीति। गृह्णामि। विश्वे। त्वा। देवाः। वैश्वानराः। ३३ (५०) ॥ [३३] ॥ प्रेति। च्यावयन्तु। दिवि। देवान्। दृꣳह। अन्तरिक्षे। वयाꣳसि। पृथिव्याम्। पार्थिवान्। ध्रुवम्। ध्रुवेण। हविषा। अवेति। सोमम्। नयामसि॥ यथा। नः। सर्वम्। इत्। जगत्। अयक्ष्मम्। सुमना इति सु—मनाः। असत्॥ यथा। नः। इन्द्रः। इत्। विशः। केवलीः। सर्वाः। समनस इति स—मनसः। करत्॥ यथा। नः। सर्वाः। इत्। दिशः। अस्माकम्। केवलीः। असन्न् ॥ [३४] ॥ वैश्वानरा—श्चत्वारिꣳशच्च) (आ८) ॥ [३५] ॥

॥ ८ ॥

यत्। वै। होता। अद्ध्वर्युम्। अभ्याह्वयत इत्यभि—आह्वयते। वज्रम्। एनम्। अभि। प्रेति। वर्तयति। उक्थशा इत्युक्थ—शाः। इति। आह। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। त्रीणि। एतानि। अक्षराणि। त्रिपदेति त्रि—पदा। गायत्री। गायत्रम्। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। गायत्रिया। एव। प्रातस्सवन इति प्रातः—सवने। वज्रम्। अन्तः। धत्ते। उक्थम्। वाचि। इति। आह। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। चत्वारि। एतानि। अक्षराणि। चतुष्पदेति चतुः—पदा। त्रिष्टुप्। त्रैष्टुभम्। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। त्रिष्टुभा। एव। माद्ध्यन्दिने। सवने। वज्रम्। अन्तः। धत्ते। ३५ (५०) ॥ [३६] ॥ उक्थम्। वाचि। इन्द्राय। इति। आह। तृतीयसवनमिति तृतीय—सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। सप्त। एतानि। अक्षराणि। सप्तपदेति सप्त—पदा। शक्करी। शाक्करः। वज्रः। वज्रेण। एव। तृतीयसवन इति तृतीय—सवने। वज्रम्। अन्तः। धत्ते। ब्रह्मवादिन इति ब्रह्म—वादिनः। वदन्ति। सः। तु। वै। अध्वर्युः। स्यात्। यः। यथासवनमिति यथा—सवनम्। प्रतिगर इति प्रति—गरे। छन्दाꣳसि। संपादयेदिति सं—पादयेत्। तेजः। प्रातस्सवन इति प्रातः—सवने। आत्मन्न्। दधीत। इन्द्रियम्। माध्यन्दिने। सवने। पशून्। तृतीयसवन

इति तृतीय—सवने। इति। उक्थशा इत्युक्थ—शाः। इति। आह। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। त्रीणि। एतानि। अक्षराणि। ३६ (५०) ॥ [३७] ॥ त्रिपदेति त्रि—पदा। गायत्री। गायत्रम्। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। प्रातस्सवन इति प्रातः—सवने। एव। प्रतिगर इति प्रति—गरे। छन्दांसि। समिति। पादयति। अथो इति। तेजः। वै। गायत्री। तेजः। प्रातस्सवनमिति प्रातः—सवनम्। तेजः। एव। प्रातस्सवन इति प्रातः—सवने। आत्मन्न्। धत्ते। उक्थम्। वाचि। इति। आह। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। चत्वारि। एतानि। अक्षराणि। चतुष्पदेति चतुः—पदा। त्रिष्टुप्। त्रैष्टुभम्। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। माद्ध्यन्दिने। एव। सवने। प्रतिगर इति प्रति—गरे। छन्दांसि। समिति। पादयति। अथो इति। इन्द्रियम्। वै। त्रिष्टुक्। इन्द्रियम्। माद्ध्यन्दिनम्। सवनम्। ३७ (५०) ॥ [३८] ॥ इन्द्रियम्। एव। माद्ध्यन्दिने। सवने। आत्मन्न्। धत्ते। उक्थम्। वाचि। इन्द्राय। इति। आह। तृतीयसवनमिति तृतीय—सवनम्। प्रतिगीर्येति प्रति—गीर्य। सप्त। एतानि। अक्षराणि। सप्तपदेति सप्त—पदा। शक्करी। शाक्कराः। पशवः। जागतम्। तृतीयसवनमिति तृतीय—सवनम्। तृतीयसवन इति तृतीय—सवने। एव। प्रतिगर इति प्रति—गरे। छन्दांसि। समिति। पादयति। अथो इति। पशवः। वै। जगती। पशवः। तृतीयसवनमिति तृतीय—सवनम्। पशून्। एव। तृतीयसवन इति तृतीय—सवने। आत्मन्न्। धत्ते। यत्। वै। होता। अद्ध्वर्युम्। अभ्याह्वयत इत्यभि—आह्वयते। आव्यम्। अस्मिन्न्। दधाति। तत्। यत्। न। ३८ (५०) ॥ [३९] ॥ अपहनीतेत्यप—हनीत। पुरा। अस्य। संवँथ्सरादिति सं—वथ्सरात्। गृहे। एति। वेवीरन्न्। शोशसा। मोदः। इव। इति। प्रत्याह्वयत इति प्रति—आह्वयते। तेन। एव। तत्। अपेति। हते। यथा। वै। आयतामित्या—यताम्। प्रतीक्षत इति प्रति—ईक्षते। एवम्। अद्ध्वर्युः। प्रतिगरमिति प्रति—गरम्। प्रतीति। ईक्षते। यत्। अभिप्रतिगृणीयादित्यभि—प्रतिगृणीयात्। यथा। आयतयेत्या—यतया। समृच्छत इति सं—ऋच्छते। तादृक्। एव। तत्। यत्। अर्द्धर्चादित्यर्द्ध—ऋचात्। लुप्येत। यथा। धावद्भ्य इति धावत्—भ्यः। हीयते। तादृक्। एव। तत्। प्रबाहुगिति प्र—बाहुक्। वै। ऋत्विजाम्। उद्गीथा इत्युत्—गीथाः। उद्गीथ इत्युत्—गीथः। एव। उद्गातृणामित्युत्—गातृणाम्। ३९ (५०) ॥ [४०] ॥

ऋचः। प्रणव इति प्र—नवः। उक्थशꣳसिनामित्युक्थ—शꣳसिनाम्। प्रतिगर इति प्रति—गरः। अद्ध्वर्यूणाम्। यः। एवम्। विद्वान्। प्रतिगृणातीति प्रति—गृणाति। अन्नाद इत्यन्न—अदः। एव। भवति। एति। अस्य। प्रजायामिति प्र—जायाम्। वाजी। जायते। इयम्। वै। होता। असौ। अद्ध्वर्युः। यत्। आसीनः। शꣳसति। अस्याः। एव। तत्। होता। न। एति। आस्ते। इव। हि। इयम्। अथो इति। इमाम्। एव। तेन। यजमानः। दुहे। यत्। तिष्ठन्न्। प्रतिगृणातीति प्रति—गृणाति। अमुष्याः। एव। तत्। अद्ध्वर्युः। न। एति। ४० (५०) ॥ [४१] ॥ तिष्ठति। इव। हि। असौ। अथो इति। अमूम्। एव। तेन। यजमानः। दुहे। यत्। आसीनः। शꣳसति। तस्मात्। इतः प्रदानमितीतः—प्रदानम्। देवाः। उपेति। जीवन्ति। यत्। तिष्ठन्न्। प्रतिगृणातीति प्रति—गृणाति। तस्मात्। अमुतः प्रदानमित्यमुतः—प्रदानम्। मनुष्याः। उपेति। जीवन्ति। यत्। प्राङ्। आसीनः। शꣳसति। प्रत्यङ्। तिष्ठन्न्। प्रतिगृणातीति प्रति—गृणाति। तस्मात्। प्राचीनम्। रेतः। धीयते। प्रतीचीः। प्रजा इति प्र—जाः। जायन्ते। यत्। वै। होता। अद्ध्वर्युम्। अभ्याह्वयत इत्यभि—आह्वयते। वज्रम्। एनम्। अभि। प्रेति। वर्तयति। पराङ्। एति। वर्तते। वज्रम्। एव। तत्। नीति। करोति ॥ [४२] ॥

(सवने वज्रमन्तर्धत्ते त्रीण्येतान्यक्षराणी न्द्रियं माध्यन्दिनꣳ सवनं नो द्वातृणा मध्वर्युर्नैति वर्तयत्य ष्टौ च) ॥ ९ ॥

उपयामगृहीत इत्युपयाम—गृहीतः। असि। वाक्षसदिति वाक्ष—सत्। असि। वाक्पाभ्यामिति वाक्—पाभ्याम्। त्वा। क्रतुपाभ्यामिति क्रतु—पाभ्याम्। अस्य। यज्ञस्य। ध्रुवस्य। अद्ध्यक्षाभ्यामित्यधि—अक्षाभ्याम्। गृह्णामि। उपयामगृहीत इत्युपयाम—गृहीतः। असि। ऋतसदित्यृत—सत्। असि। चक्षुष्पाभ्यामिति चक्षुः—पाभ्याम्। त्वा। क्रतुपाभ्यामिति क्रतु—पाभ्याम्। अस्य। यज्ञस्य। ध्रुवस्य। अद्ध्यक्षाभ्यामित्यधि—अक्षाभ्याम्। गृह्णामि। उपयामगृहीत इत्युपयाम—गृहीतः। असि। श्रुतसदिति श्रुत—सत्। असि। श्रोत्रपाभ्यामिति श्रोत्र—पाभ्याम्। त्वा। क्रतुपाभ्यामिति क्रतु—पाभ्याम्। अस्य। यज्ञस्य। ध्रुवस्य। अद्ध्यक्षाभ्यामित्यधि—अक्षाभ्याम्। गृह्णामि। देवेभ्यः। त्वा। विश्वदेवेभ्य इति विश्व—देवेभ्यः। त्वा। विश्वेभ्यः। त्वा। देवेभ्यः। विष्णो। उरुक्रमेत्युरु—क्रम। एषः। ते। सोमः। तम्। रक्षस्व। ४२

(५०) ॥ [४३] ॥ तम्। ते। दुश्चक्षा इति दुः—चक्षाः। मा। अवेति। ख्यत्। मयि। वसुः। पुरोवसुरिति पुरः—वसुः। वाक्पा इति वाक्—पाः। वाचम्। मे। पाहि। मयि। वसुः। विदद्वसुरिति विदत्—वसुः। चक्षुष्पा इति चक्षुः—पाः। चक्षुः। मे। पाहि। मयि। वसुः। सय्ँयद्वसुरिति सय्ँयत्—वसुः। श्रोत्रपा इति श्रोत्र—पाः। श्रोत्रम्। मे। पाहि। भूः। असि। श्रेष्ठः। रश्मीनाम्। प्राणपा इति प्राण—पाः। प्राणमिति प्र—अनम्। मे। पाहि। धूः। असि। श्रेष्ठः। रश्मीनाम्। अपानपा इत्यपान—पाः। अपानमित्यप—अनम्। मे। पाहि। यः। नः। इन्द्रवायू इतीन्द्र—वायू। मित्रावरुणाविति मित्रा—वरुणौ। अश्विनौ। अभिदासतीत्यभि—दासति। भ्रातृव्यः। उत्पिपीत इत्युत्—पिपीते। शुभः। पती इति। इदम्। अहम्। तम्। अधरम्। पादयामि। यथा। इन्द्र। अहम्। उत्तम इत्युत्—तमः। चेतयानि ॥ [४४] ॥

(रक्षस्व भ्रातृव्य स्त्रयोदश च) ॥ १० ॥

प्रेति। सः। अग्ने। तव। ऊतिभिरित्यूति—भिः। सुवीराभिरिति सु—वीराभिः। तरति। वाजकर्मभिरिति वाजकर्म—भिः॥ यस्य। त्वम्। सख्यम्। आविथ॥ प्रेति। होत्रे। पूर्व्यम्। वचः। अग्नये। भरत। बृहत्॥ विपामिति वि—पाम्। ज्योतीꣳषि। बिभ्रते। न। वेधसे॥ अग्ने। त्री। ते। वाजिना। त्री। सधस्थेति सध—स्था। तिस्रः। ते। जिह्वाः। ऋतजातेत्यृत—जात। पूर्वीः॥ तिस्रः। उ। ते। तनुवः। देववाता इति देव—वाताः। ताभिः। नः। पाहि। गिरः। अप्रयुच्छन्नित्यप्र—युच्छन्न्॥ समिति। वाम्। कर्मणा। समिति। इषा। ४४ (५०) ॥ [४५] ॥ हिनोमि। इन्द्राविष्णू इतीन्द्रा—विष्णू। अपसः। पारे। अस्य॥ जुषेथाम्। यज्ञम्। द्रविणम्। च। धत्तम्। अरिष्टैः। नः। पथिभिरिति पथि—भिः। पारयन्ता॥ उभा। जिग्यथुः। न। परेति। जयेथे इति। न। परेति। जिग्ये। कतरः। चन। एनोः॥ इन्द्रः। च। विष्णो इति। यत्। अपस्पृधेथाम्। त्रेधा। सहस्रम्। वीति। तत्। ऐरयेथाम्॥ त्रीणि। आयूꣳषि। तव। जातवेद इति जात—वेदः। तिस्रः। आजानीरित्या—जानीः। उषसः। ते। अग्ने। ताभिः॥ देवानाम्। अवः। यक्षि। विद्वान्। अथ। ४५ (५०) ॥ [४६] ॥ भव। यजमानाय। शम्। योः॥ अग्निः। त्रीणि। त्रिधातूनीति त्रि—धातूनि। एति। क्षेति। विदथा। कविः॥ सः। त्रीन्। एकादशान्।

इह ॥ यरूषत् । च । पिप्रयत् । च । नः । विप्रः । दूतः । परिष्कृतः ॥ नभन्ताम् । अन्यके । समे ॥ इन्द्राविष्णू इतीन्द्रा—विष्णू । दृꣳहिताः । शम्बरस्य । नव । पुरः । नवतिम् । च । श्नथिष्टम् ॥ शतम् । वर्चिनः । सहस्रम् । च । साकम् । हथः । अप्रति । असुरस्य । वीरान् ॥ उत । माता । महिषम् । अन्विति । अवेनत् । अमी इति । त्वा । जहति । पुत्र । देवाः ॥ अथ । अब्रवीत् । वृत्रम् । इन्द्रः । हनिष्यन्न् । सखे । विष्णो इति । वितरमिति वि—तरम् । वीति । क्रमस्व ॥ [४७] ॥

(इषा ऽथ त्वा त्रयोदश च) ॥ ११ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

तृतीयकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः — पद पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
११	४७

ॐ